याकूब ने स्वर्ग में देखा

प्रार्थना: प्रिय प्रभु, बच्चों की सहायता कीजिये कि वे पुराने नियम के पूर्वजों के साहसिक कार्यो की प्रसंशा कर सकें और उन से शिक्षा ले सकें।

बच्चों की आयु के अनुसार उचित गतिविधि को चुनिये और सिखाईए।

याकूब द्वारा देखा गया सींढ़ी का दर्शन जिसका सिरा स्वर्ग तक पहुंचा हुआ था और परमेश्वर के दूत उस पर चढ़ते और उतरते थे। (उत्पत्ति 28:12)।

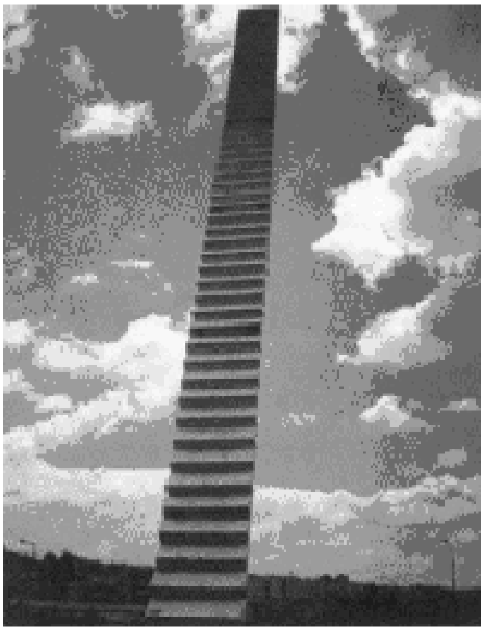

उत्पत्ति 28:10–22 पर आधारित कोई बड़ा बालक या अध्यापक याकूब की कहानी पढ़े। इस कहानी में बताया जाता है कि किस प्रकार परमेश्वर ने याकूब को दर्शन दिया जो इस्राएल का एक पूर्वज था।

कहानी सुनाने के बाद ये प्रश्न पूछिए : *(प्रत्येक प्रश्न के जवाब भी साथ कोष्ठक में दिए गये हैं।)*

- अपनी यात्रा में विश्राम के समय सोते समय याकूब ने किस वस्तु का तकिया बनाया? (देखें पद 11)
- स्वप्न में याकूब ने क्या देखा? (पद 12)
- याकूब के वंश के विषय में उससे परमेश्वर ने क्या प्रतिज्ञा की? (पद 14)
- परमेश्वर ने क्या कहा कि, पृथ्वी के सारे कुल किस के द्वारा आशीष पाएंगे? (पद 14)
- यात्रा में परमेश्वर ने किस बात का आश्वासन याकूब को दिया? (पद 15)
- जब याकूब जागा तो क्यों भय खाने लगा? (पद 16–17)
- याकूब ने परमेश्वर द्वारा दी गई आशीषों में से किसे दशमांश देने की प्रतिज्ञा की, (पद 20–22)

याकूब के स्वप्न की कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करने के लिए लिखें (उत्पत्ति 28:10–22)

- आराधना के अगुवे के सहयोग से उस रचना को बच्चों द्वारा भागों पर अभिनय प्रस्तुत कराएं।
- अपने पढ़ाने के समय में बच्चों को नाटक की तैयारी कराएं।
- आवश्यकता नहीं है कि आप कहानी के सभी हिस्से प्रस्तुत करें।

- बड़े बच्चे छोटे बच्चों की नाटक की तैयारी करने में सहायता करें।
- बड़े तथा युवा बच्चे निम्न भूमिकाएं करें :

  याकूब: एक पत्थर तैयार करें और एक छोटी बोतल लें।

  परमेश्वर की आवाज़

  उद्घोषक: यह व्यक्ति कहानी का सारांश प्रस्तुत करे, और बच्चों को क्या बोलना है, स्मरण कराए।
- छोटे बच्चे स्वर्गदूतों की भूमिका करें, सीढ़ी का चित्रण करने के लिये कुर्सी आदि का प्रयोग कर सकते हैं।

उद्घोषक: उत्पत्ति 28:10-22 पर आधारित याकूब की कहानी बताए और यह कहे, “याकूब ने ऐसा कहा ---”

याकूब: अपने सिर के नीचे पत्थर रखकर लेट जाएं, और कहें, “अब रात हो गई है, और मुझे लम्बी यात्रा करनी है, अब मैं सो जाता हूं।”

स्वर्गदूत: सीढ़ी याकूब के पास रख दें, स्वर्गदूत उसके उपर-नीचे चढ़ें व उतरें।

परमेश्वर का स्वर: (हर प्रतिज्ञा ऊंचे स्वर में व स्पष्ट पढ़ें): हे याकूब, मैं तेरे पिता इसहाक और तेरे दादा अब्राहम का परमेश्वर हूँ। मैं तुझे असंख्य सन्तानें दूंगा। मैं जगत की सब जातियों को उनके द्वारा आशीष दूंगा। मैं तेरी रक्षा करूंगा।

स्वर्गदूत: चले जाएं और सीढ़ी भी ले जाएं।

याकूब: जाग उठता है और कहता है, क्या ही अदभुद स्वप्न था, यह स्थान क्या ही महिमापूर्ण है, क्योंकि यहां परमेश्वर की उपस्थिति है। मुझे यहां एक स्मारक खड़ा कर देना चाहिये,(तब सिरहाने रखा पत्थर खड़ा करे और बोतल से तेल निकालकर पत्थर पर डालने का अभिनय करे।) और कहे - यदि परमेश्वर यात्रा में मेरी रक्षा करे, तो वह मेरा परमेश्वर ठहरेगा।

उद्घोषक: जिन्होंने नाटक में सहायता की उन सभी का धन्यवाद।

प्रश्न: यदि बच्चों ने युवाओं के लिये नाटक प्रस्तुत किया है तो उनसे वे प्रश्न पूछें जो सूचि में लिखे हैं

बच्चों से पूछें : अन्य और कौन सी बातें है जिनके द्वारा परमेश्वर स्वयं को मनुष्यों पर प्रकट करता है? (बच्चे उदारण बताएं)

सीढ़ी का एक चित्र बनाएं और बच्चों को उसकी नकल बनाने को कहें। वे इस चित्र के द्वारा आराधना के समय युवाओं को समझा सकते हैं कि यह सीढ़ी इस बात का प्रतीक है कि परमेश्वर हमारे चारों ओर है, हालांकि वह हमें दिखाई नहीं देता।

इफिसियों 5:20 कंठस्थ कीजिए।

"सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।"

बड़े बच्चों से कविता या गीत की रचना करने के लिये कहें जो विश्वासियों के साथ परमेश्वर की निरंतर उपस्थिति के विषय में हो।

कविता: कम से कम चार बच्चे भजन संहिता 139:7-10 से कुछ पद याद करें :

"मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं, या तेरे सामने से किधर भागूं

यदि मैं आकाश पर चढ़ूं तो तू वहां है।

यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं, तो वहां भी तू है।

यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़कर समुद्र के पार जा बसूं तो वहां भी तू

अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा, और अपने दाहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा।"

प्रार्थना: हे पिता, याकूब पर आपने स्वयं को प्रकट किया आपका धन्यवाद। जैसे आप याकूब के साथ थे वैसे ही आप सदा हमारे साथ हैं। जैसे वह आपके उपर भरोसा रखता था, हमें भी भरोसा रखना सिखाएं। आपकी आशीषों के लिये धन्यवाद कि आपने मुझे और प्रत्येक जन को, याकूब के वंशज प्रभु यीशु के द्वारा आशीषित किया है

Copyright 2003 © by Paul-Timothy. May be freely copied. Download from www.Paul-Timothy.net